



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	३१-०१-२५		

The Tribune

HAU SIGNS MOU FOR MILLET PROMOTION



Hisar: Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU) has signed a memorandum of understanding (MoU) with Murlidhar Seeds Corporation, Hyderabad, to promote the improved Bajra variety, HHB 67 Improved-2. This collaboration aims to commercially produce and distribute reliable seeds to farmers for enhancing yields. The HAU Vice Chancellor, Prof BR Kamboj, highlighted the importance of such agreements to expand the reach of university's improved millet (Bajra) varieties. The improved hybrid, developed through marker-assisted selection, offers better downy mildew resistance, drought tolerance and stable yields. Recommended for rain-fed regions in Haryana, Rajasthan and Gujarat, it promises an average grain yield of 8 quintals per acre and 20.9 quintals of dry fodder per acre.



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

संसाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरूक	३१-०१-२५	५	१-५

सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली अपनाकर पानी की बर्बादी रोकें : राजबीर गर्ग

जागरण संगठनाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय स्थित उद्यान विभाग के सुनियोजित कृषि विकास केंद्र द्वारा सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली विषय पर सात दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज के मार्गदर्शन में आयोजित किए गए। प्रशिक्षण में 24 किसानों एवं छह विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के समापन पर विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग मुख्य अतिथि जबकि कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एसके पाहुजा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने बताया कि सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली सिंचाई की सर्वोत्तम एवं आधुनिक विधि है। इस प्रणाली से कम पानी में अधिक क्षेत्र की सिंचाई की जा सकती है। देश के अधिकांश



हृष्टि में सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली विषय पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन के अवसर पर प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित करते मुख्यातिथि डा. राजबीर गर्ग • पीआरओ

क्षेत्रों में सिंचाई कच्ची नालियों से की जाती है। जिसमें तकरीबन 30 से 40 प्रतिशत पानी रिसाव के कारण बेकार चला जाता है। सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली में पानी की बर्बादी नहीं होती। इस विधि से सिंचाई करने पर 30 से 40

प्रतिशत पानी की बचत होती है। इस विधि से फसलों की उर्जवता और उत्पादकता में भी सुधार होता है। उन्होंने बताया कि सरकार भी प्रति बूंद अधिक फसल के मिशन के अंतर्गत फव्वारा व टपका सिंचाई

पद्धति को बढ़ावा दे रही है। डा. एसके पाहुजा ने कहा कि देश में लगभग 200 मिलियन हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि है, जिसमें से तकरीबन 95 मिलियन हेक्टर भूमि सिंचित है। यह कुल क्षेत्रफल का

केवल 48 प्रतिशत है। ऐसे में 52 प्रतिशत असिंचित कृषि भूमि में उन्नत कृषि हेतु आवश्यक जल की आपूर्ति करना भी चुनौतीपूर्ण है। समुचित जल प्रबंधन द्वारा ही इस चुनौती का समाना किया जा सकता है।

23 विषयों पर दिए व्याख्यान

कार्यक्रम के दौरान विभिन्न 23 विषयों पर व्याख्यान दिए गए। इसमें सूक्ष्म सिंचाई के प्रकार, इसकी आवश्यकता, इसमें प्रयोग होने वाले मुख्य अव्यव, प्रयोग में आने वाली समस्याएं एवं उनका समाधान, हाइड्रोपोनिक्स, आटोमेशन सिस्टम तथा इसमें प्रयोग होने वाले उत्कृष्टता केन्द्र मांगियाना, स्याहड़ा, जैन इरीगेशन प्रोजेक्ट-मंगाली, ग्राहिंग यूनिट, दीन दशल उपाध्याय जैविक उत्कृष्टता केन्द्र, हाइड्रोपोनिक इकाई व एग्री ट्रिजम सेंटर का भ्रमण करवाया गया। इस अवसर पर डा. राजपाल दलाल, डा. सुशील शर्मा, डा. विकास शर्मा, डा. सतपाल बलौदा, डा. आदेश कुमार, डा. रवीना सैनी व राजकुमार मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब एसवे	३१-०१-२५	५	१-५

सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली अपनाने का आह्वान, 30-40 प्रतिशत पानी की होती है बचत

हिसार, 30 जनवरी (गठी): कृषि क्षेत्र में सिंचाई के लिए पानी की उपलब्धता एक चुनौती बनी रहती है। खासतौर से रेतीले इलाके यह गंभीर समस्या है। कृषि भूमि के लिए नहरी पानी को लेकर धरने-प्रदर्शन तक होते रहे हैं। इस समस्या को लेकर किसान अक्सर सिंचाई विभाग के अधिकारियों से मिलते रहते हैं। इस समस्या से निपटने के लिए अब सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली तकनीक अपनाने का आह्वान किया जा रहा है।

जात रहे कि सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली सिंचाई की एक आधुनिक विधि है। इसमें कम पानी से ज्यादा क्षेत्र की सिंचाई की जाती है। इस प्रणाली में पानी को पाइपलाइन के जरिए सीधे पौधों के जड़ क्षेत्रों में पहुंचाया जाता है। इससे पानी की बर्बादी कम होती है और फसलों की पैदावार भी बढ़ती है। वर्तमान में तीन प्रकार की सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियां (स्थिकलर, डिप और बब्ललर) उपयोग में लाई जाती हैं। इसको लेकर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय स्थित उद्यान विभाग के सुनियोजित कृषि विकास केंद्र द्वारा 'सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली' विषय पर सात दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया है। प्रशिक्षण में 24 किसानों एवं 6 विद्यार्थियों ने भाग लिया।



**सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली
अपनाकर पानी की बर्बादी
को रोकें : डा. राजबीर**

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने बताया कि 'सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली' सिंचाई की सर्वोत्तम एवं आधुनिक विधि है। इस प्रणाली से कम पानी में अधिक क्षेत्र की सिंचाई की जा सकती है। देश के अधिकांश क्षेत्रों में सिंचाई कच्ची नालियों से की जाती है। जिसमें तकरीबन 30 से 40 प्रतिशत पानी रिसाव के कारण बेकार चला जाता है। सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली में पानी की बर्बादी नहीं होती। इस विधि से सिंचाई

करने पर 30 से 40 प्रतिशत पानी की बचत होती है। इस विधि से फसलों की गुणवत्ता और उत्पादकता में भी सुधार होता है। उन्होंने बताया कि सरकार भी 'प्रति बूद्ध अधिक फसल' के मिशन के अंतर्गत फव्वारा व टपका सिंचाई पद्धति को बढ़ावा दे रही है।

**कम पानी से अधिक उत्पादन लेने
के लिए सूक्ष्म सिंचाई विधि एवं
रामबाण तकनीक : डा. पाहुजा**

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एस.के. पाहुजा ने बताया कि देश में लगभग 200 मिलियन हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि है, जिसमें से तकरीबन 95 मिलियन हेक्टर भूमि सिंचित है।

मुख्यालिय डा. राजबीर गर्ग प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित करते हुए।

यह कुल क्षेत्रफल का केवल 48 फीसदी है। ऐसे में 52 फीसदी असिंचित कृषि भूमि में उन्नत कृषि हेतु आवश्यक जल की आपूर्ति करना भी चुनौतीपूर्ण है। समुचित जल प्रबंधन द्वारा ही इस चुनौती का सामना किया जा सकता है। इसके अलावा देश में विश्व की आबादी के लगभग 17 फीसदी लोग निवास करते हैं जबकि देश में विश्व के केवल 4 फीसदी जल संसाधन उपलब्ध हैं। ऐसे में पानी का संरक्षण करने की चुनौती करना बहुत बड़ी है, जिसमें सूक्ष्म सिंचाई पद्धति काफी सहायक सिद्ध हो सकती है। कम पानी से अधिक उत्पादन लेने के लिए सूक्ष्म सिंचाई विधि एक रामबाण तकनीक है। प्रशिक्षण के दौरान वैज्ञानिकों ने किसानों को सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली के बारे में विस्तार से प्रशिक्षण दिया। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न 23 विषयों पर व्याख्यान दिए गए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाप्तार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
१८५२ मार्च २०२५	३१.०१.२५	३	७-८

एचएयू: 'सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली' विषय पर 24 किसान और 6 विद्यार्थियों ने लिया प्रशिक्षण

हिसार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय स्थित उद्यान विभाग के सुनियोजित कृषि विकास केंद्र की तरफ से 'सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली' विषय पर सात दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम किया गया। एचएयू के कुलपति प्रो. बी.आर. कामबाज के मार्गदर्शन में आयोजित प्रशिक्षण में 24 किसानों एवं 6 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

कार्यक्रम के समापन पर विवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग मुख्यालिथि जबकि कृषि कॉलेज के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित



रहे। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि 'सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली' सिंचाई की सर्वोत्तम एवं आधुनिक विधि है। इस प्रणाली से कम पानी में अधिक क्षेत्र की सिंचाई की जा सकती है। देश के अधिकांश क्षेत्रों में सिंचाई कच्ची नालियों से की जाती है। इसमें तकरीबन 30 से 40 प्रतिशत पानी रिसाव के कारण बेकार चला जाता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ईर · भौम	२१-०१-२५	१२	३-४

सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली से रोकें पानी की बर्बादी

हरियाणा में 'सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली' विषय पर सात दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न

हरियाणा न्यूज ► हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय स्थित उद्यान विभाग के सुनियोजित कृषि विकास केंद्र की ओर से 'सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली' विषय पर सात दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में 24 किसानों एवं 6 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के समाप्ति अवसर पर गुरुवार को विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग मुख्य अतिथि रहे जबकि कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठानता डॉ. एसके पाहुजा विशिष्ट अतिथि के



हिसार। मुख्यातिथि डॉ. राजबीर गर्ग प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित करते हुए।

रूप में उपस्थित रहे। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि 'सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली' सिंचाई की सबोत्तम एवं आधुनिक विधि है। इस प्रणाली से कम पानी में अधिक क्षेत्र की सिंचाई की जा सकती है। देश के अधिकांश क्षेत्रों में सिंचाई

कच्ची नालियों से की जाती है। जिसमें तकरीबन 30 से 40 प्रतिशत पानी रिसाव के कारण बेकार चला जाता है। सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली में पानी की बर्बादी नहीं होती। इस विधि से सिंचाई करने पर 30 से 40 प्रतिशत पानी की बचत होती है।

सूक्ष्म सिंचाई विधि एक राजबाण तकनीक

डॉ. एसके पाहुजा ने प्रतिभागियों को सबोत्तम करते हुए कहा कि देश ने लगभग 200 मिलियन हेक्टेयर कृषि योन्य भूमि है, जिसमें से तकरीबन 95 मिलियन हेक्टेयर मूलि सिंचित है। यह कुल क्षेत्रफल का केवल 48 फॉरसदी है। ये में 52 फॉरसदी असिंचित कृषि मूलि में उन्नत कृषि के लिए आवश्यक जल की आपूर्ति करना भी चुनौतीपूर्ण है। समुचित जल प्रबल्धन द्वारा ही इस चुनौती का समान किया जा सकता है। कम पानी से अधिक उत्पादन लेने के लिए सूक्ष्म सिंचाई विधि एक राजबाण तकनीक है। प्रशिक्षण के दौरान वैज्ञानिकों ने किसी को सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली के बारे में विस्तार से प्रशिक्षण दिया। तिथिका 23 विषयों पर व्याख्यान दिए गए। कार्यक्रम के अंत में डॉ. प्रिस ने सभी का धन्यवाद किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज़	30.01.25		

सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली अपनाएं किसान : डॉ. गर्ग

हक्की में 'सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली' विषय पर सात दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय स्थित उद्यान विभाग के मुख्यमंत्री ने जूनियर कृषि विकास केंद्र द्वारा 'सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली' विषय पर सात दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में 24 किसानों एवं 6 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के समाप्त अवसर पर विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. गणेशर गण मुख्यालियत जबकि कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. एम्से पाहुड़ विशिष्ट अधिकारी के स्वयं में उपस्थित रहे।

अनुसंधान निदेशक ने बताया कि 'सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली' सिंचाई की सर्वोत्तम एवं अधिकृत विधि है। इस प्रणाली से कम पानी में अधिक क्षेत्र



को सिंचाई की जा सकती है। देश के अधिकांश क्षेत्रों में सिंचाई कर्त्ती तात्पर्यों से की जाती है। जिसमें तकरीबन 30 से 40 प्रतिशत पानी रिसाव के कारण बेकार जला जाता है। सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली में पानी की बचती नहीं होती। इस विधि से

सिंचाई करने पर 30 से 40 प्रतिशत पानी की बचत होती है। इस विधि से फसलों की गुणवत्ता और उत्पादकता में भी सुधार होता है। उन्होंने बताया कि सरकार भी 'प्रति बूट अधिक फसल' के मिशन के अंतर्गत फल्वारा व टपका सिंचाई पद्धति को बढ़ावा दे रही है।

डॉ. एम्से पाहुड़ ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि देश में लगभग 200 मिलियन हेक्टर कृषि योग्य भूमि है, जिसमें से तकरीबन 95 मिलियन हेक्टर भूमि सिंचित है। यह क्षेत्रफल का केवल

48 फीसदी है। ऐसे में 52 फीसदी असिंचित कृषि भूमि में ऊत कर्त्ता हेतु आवश्यक जल की आपूर्ति करना भी चुनौतीपूर्ण है। समर्चित जल प्रबंधन द्वारा ही इस चुनौती का सामना किया जा सकता है। इसके अलावा देश में विश्व की आजादी के लगभग 17 फीसदी लोग निवास करते हैं जबकि देश में विश्व के केवल 4 फीसदी जल संसाधन उपलब्ध हैं। ऐसे में पानी का संरक्षण करने की चुनौती करना बहुत बड़ी है, जिसमें सूक्ष्म सिंचाई पद्धति कानूनी सहायक मिड हे सकती है। कम पानी से अधिक उत्पादन सेने के लिए सूक्ष्म सिंचाई विधि एक गमलांग तकनीक है। प्रशिक्षण के दौरान वैज्ञानिकों ने किसानों की सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली के बारे में प्रशिक्षण दिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	३१.०१.२५	५	५-८

सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली अपनाकर पानी की बब्डी रोकें : डा. गर्ग

हिसार, 30 जनवरी (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय स्थित ऊदान विभाग के सुनियोजित कृषि विकास केंद्र द्वारा 'सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली' विषय पर सात दिवसीय कुषक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के मार्गदर्शन में आयोजित किए गए प्रशिक्षण में 24 किसानों एवं 6 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग मुख्यातिथि जबकि कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. एसके पाहुजा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि 'सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली' सिंचाई की सर्वोत्तम एवं आधुनिक विधि है। इस



मुख्यातिथि डॉ. राजबीर गर्ग प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित करते हुए।

प्रणाली से कम पानी में अधिक क्षेत्र की सिंचाई की जा सकती है। देश के अधिकांश क्षेत्रों में सिंचाई कच्ची नालियों से की जाती है। जिसमें तकरीबन 30 से 40 प्रतिशत पानी रिसाव के कारण बेकार चला जाता है। सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली में पानी की बब्डी नहीं होती। इस विधि से सिंचाई करने पर 30 से 40 प्रतिशत पानी की बब्डी होती है। इस विधि से फसलों की गुणवत्ता और उत्पादकता में भी सुधार होता है। उन्होंने बताया कि सरकार भी

'प्रति बूंद अधिक फसल' के मिशन के अंतर्गत फव्वारा व टपका सिंचाई पद्धति को बढ़ावा दे रही है। डॉ. एसके पाहुजा ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि देश में लगभग 200 मिलियन हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि है, जिसमें से तकरीबन 95 मिलियन हेक्टर भूमि सिंचित है। यह समुचित जल प्रबंधन द्वारा ही इस चुनौती का सामना किया जा सकता है। इसके अलावा देश में विश्व सिस्टम तथा इसमें प्रयोग होने वाले उर्वरक, पानी में विद्युत चालकता व

लोग निवास करते हैं जबकि देश में विश्व के केवल 4 फीसदी जल संसाधन उपलब्ध हैं। ऐसे में पानी का संख्यन करने की चुनौती करना बहुत बड़ी है, पी.एच. का महत्व तथा सरकार द्वारा दिए जाने वाले अनुदान बारे विस्तार से जानकारी दी गई। इसके साथ ही प्रतिभागियों ने फल उत्कृष्टता केंद्र मार्गियाना, स्वाहड़न, जैन इरीगेशन प्रोजेक्ट - मंगाली, ग्राफिंग यूनिट, दीन

हकृति में 'सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली' विषय पर प्रशिक्षण सम्पन्न

जिसमें सूक्ष्म सिंचाई पद्धति काफी सहायक सिद्ध हो सकती है। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न 23 विषयों पर व्याख्यान दिए गए जिनमें सूक्ष्म सिंचाई के प्रकार, इसकी आवश्यकता, इसमें से तकरीबन 95 मिलियन हेक्टर भूमि प्रयोग होने वाले मुख्य अव्यव, प्रयोग में आने वाली समस्याएं एवं उनका समाधान, हाइड्रोपोनिक्स, ऑटोमेशन बलौदा, डॉ. आदेश कुमार, डॉ. रवीना सैनी व राजकुमार मौजूद रहे।

दयाल उपाध्याय जैविक उत्कृष्टता केंद्र, हाइड्रोपोनिक्स इकाई व एग्री टरिज्म सेंटर का ग्रमण करवाया गया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. प्रिंस ने सभी का धन्यवाद किया जबकि भंच का संचालन डॉ. विकास काम्बोज ने किया। इस अवसर पर डॉ. राजपाल दलाल, डॉ. सुशील शर्मा, डॉ. विकास शर्मा, डॉ. सल्लाल बलौदा, डॉ. आदेश कुमार, डॉ. रवीना सैनी व राजकुमार मौजूद रहे।